



# जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक : भोगल

क्रमांक 073

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

दिनांक 02.05.2019

## मक्का फसल को फॉल आर्मी वर्म कीट के प्रकोप से बचाने वैज्ञानिक दल गठित

जबलपुर 2 मई। मक्का फसल को फॉल आर्मी वर्म कीट के प्रकोप से बचाने के लिये मुख्यमंत्री कार्यालय मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन के निर्देशन में 7 सदस्यीय वैज्ञानिक दल का गठन किया गया है। इस दल में जनेकृविवि के डॉ. राजेश पचौरी प्रोफेसर कीटशास्त्र, डॉ. अमित कुमार शर्मा एसोसिएट प्रोफेसर कीटशास्त्र, डॉ. विजय पराडकर प्रमुख वैज्ञानिक शस्य विज्ञान, डॉ. ए.पी. भण्डारकर वरिष्ठ वैज्ञानिक कीटशास्त्र, डॉ. आर.डी. बारपेटे वैज्ञानिक पौधरोग, डॉ. पी.एम. अम्बुलकर वैज्ञानिक कीटशास्त्र एवं प्रदेश शासन उपसंचालक कृषि श्री जी.आर. हेडाऊ शामिल हैं। दल ने छिन्दवाड़ा जिले में ग्रीष्म कालीन मक्का फसल का खेतों में सघन निरीक्षण किया गया। भ्रमण के दौरान फॉल आर्मी वर्म का प्रकोप देखा गया। कीट वैज्ञानिक दल के अनुसार ग्रीष्म मौसम में इस कीट के प्रकोप की स्थिति को देखते हुये खरीफ मौसम में प्रकोप बढ़ाने की पूरी संभावना है।

वैज्ञानिकों के अनुसार मक्का उत्पादन में अग्रणी छिन्दवाड़ा जिले में आगामी खरीफ मौसम में भी मक्का फसल पर फॉल आर्मी वर्म नामक कीट के आक्रमण की संभावना बनी रहेगी। देश के विभिन्न भागों— तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में इस कीट का प्रकोप खरीफ 2018 में देखा गया। वर्तमान में कुछ क्षेत्रों में ग्रीष्म कालीन मक्का की फसल किसानों द्वारा लगाई गई है। जिसमें फॉल आर्मी वर्म का प्रकोप अधिक देखा जा रहा है। आगामी खरीफ मौसम में कीट के उपयुक्त प्रबंधन हेतु जागरूकता लाई जायेगी।

विशेष उल्लेखनीय है कि दल द्वारा निरीक्षित कृषक श्री नवीन सिंह रघुवंशी, ग्राम बांकानागनपुर विकासखंड चौराई के खेत में लगभग 10-12 एकड़ क्षेत्र में दो से तीन संकर मक्का किस्मों की बुआई फरवरी माह में की गई थी वहां फॉल आर्मी वर्म की प्रकोप अधिक देखा गया तथा माह दिसम्बर की बुआई वाली मक्का फसल प्रकोप कम देखा गया।

फॉल आर्मी वर्म का प्रकोप विगत खरीफ मौसम 2018 में मध्यप्रदेश के अनेक मक्का उत्पादन जिलों को प्रभावित कर चुका है। अतः किसानों के लिये यह आवश्यक होगा कि फॉल आर्मी वर्म प्रकोप की गंभीरता को समझें, जानें एवं प्रबंधन के उपाय सुचारु रूप से करके इस कीट के प्रकोप का प्रभावी ढंग से प्रबंधन कर सकें।

इस कोट के प्रबंधन हेतु वैज्ञानिकों ने सलाह दी है कि ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करने शंखी अवस्था को नष्ट करें। समय पर बुआई करें। मानसून वर्षा के साथ बुआई करें, विलंब ना करें। अनुशंसित पौध अन्तरण पर बुआई करें। सन्तुलित उर्वरकों का अनुशंसित मात्रा में, विशेषकर नत्रजन की मात्रा का प्रयोग अधिक ना करें। जिन क्षेत्रों में खरीफ का मक्का ली जाती है उन क्षेत्रों में ग्रीष्म कालीन मक्का ना लें तथा अनुशंसित फसल चक्र अपनायें। अन्तवर्ती फसल के रूप में दलहनी फसल मूंग उड़द लगायें एवं प्रारंभिक अवस्था में लकड़ी का बुरादा, राख एवं बारोक रेत पौधे की पोंगली में डालें। जैविक कीटनाशक के रूप में बी.टी. 1 किग्रा प्रति हेक्टेयर अथवा बिवेरिया बेसियाना 1.5 ली प्रति हेक्टेयर की छिडकाव सुबह अथवा शाम के समय करें। लगभग 5 प्रतिशत प्रकोप होने पर रासायनिक कीटनाशक के रूप में फ्लूबेन्डामाइट 20 डल्ब्यू डी जी 250 ग्राम प्रति हेक्टेयर या स्पाइनोसेड 15 ईसी, 200-250 ग्राम प्रति हेक्टेयर या इथीफनप्रॉक्स 10 ईसी 1 लीटर प्रति हेक्टेयर या एमिमामेकिअन बेंजोएट 5 एस.जी. का 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर में कीट प्रकोप की स्थिति अनुसार 15-20 दिन के अन्तराल पर 2 से 3 छिडकाव करें अथवा कार्बोफ्यूरोन 3 जी 2-3 किग्रा प्रति हेक्टेयर का उपयोग करें। प्रथम छिडकाव बुआई के बाद 15 दिन की अवधि में अवश्य करें तथा दानेदार कीटनाशकों का उपयोग पौधे की पोंगली में (5 से 1 दाने प्रति पोंगली) करें।

